International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 5, Sept.-Oct, 2023, Impact Factor: 7.326

वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचार की भूमिका

मिहिर कुमार पाठक[1], डॉ0 मो0 एहसानुल हक[2]

[1]गवेषक, शिक्षाशास्त्र विभाग, ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
[2]प्राचार्य, मिथिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बसुआरा, मधुबनी

सारांश

शिक्षा का स्वरुप समाज की आवश्यकता के अनुरुप बदलता रहता है। जैसे कि बुनियादी शिक्षा का वर्तमान में स्वरुप बदलकर तकनीकी शिक्षा हो गया है। 21 वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में शिक्षा में महत्वपूर्ण विकास हुआ है। ज्ञान–तकनीकी और शिक्षा प्राप्त करने की नई तकनीकी जैसे कम्प्यूटर, इन्टरनेट, पत्राचार शिक्षा आदि का प्रयोग तेजी से होने लगा है। व्यवसायिक क्षेत्रों की शिक्षा देने वाली शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। अतः शिक्षकों की भूमिका भी बदलती जा रही है। उनके सामने अधिक कुशल व प्रभावोत्पादक बनने की चुनौती है। अतः परम्परागत शिक्षण विधियों में नवीन दृश्य–श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करते हुए शिक्षा देने पर बल दिया जा रहा है।

शिक्षा का क्षेत्र जड़ नहीं वरण गत्यात्मक है। गत्यात्मकता ही शिक्षा को नवीन बनाए रखती है। वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, तकनीकी विकास तथा भूमण्डलीकरण तत्व के परिणामस्वरुप शिक्षा तथा शिक्षा प्रबन्ध का रुप परिवर्तित होता है। ज्ञान का विस्फोट अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। क्योंकि वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं क्रिया को प्रभावित किया है, तथा इन प्रभावों से शिक्षा भी अछूती नहीं है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण मशीनों, टेलीविजन, टेपरिकार्डर, कम्प्यूटर, भाषा प्रयोगशाला आदि के प्रयोग से शिक्षा प्रक्रिया का यंत्रीकरण किया जा रहा है। इस प्रकार की गत्यात्मकता जिससे शिक्षा में नवीन विचारों, तथ्यों, वस्तुओं, क्रियाओं, विधियों, तकनीकों का शिक्षा में समावेश ही नवाचार कहलाता है। नवाचार का अर्थ मात्र नवीन विचार, तथ्य, क्रिया से नहीं वरन् शिक्षा के क्षेत्र में सम्मिलित वे सभी विचार हैं, जो शिक्षा की गत्यात्मकता को बनाए रखते है, जिनसे शिक्षा समीचीन बनी रहती है।

शब्द कुंजी : सूचना व संचार प्रौद्यौगिकी, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, गुणवत्ता

प्रस्तावना

शिक्षा वह हथियार है, जिससे जीवन के हर संघर्ष में सफलता पायी जा सकती है। शिक्षा प्राप्त करने वाला विद्यार्थी उस सुप्त् व शुष्क बीज की तरह होता है, जिसके भीतर पुष्पन व फलन की असीम सम्भावनाएँ छिपी होती है। वर्तमान युग तकनीकी का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलता लाने हेतु तकनीकी प्रभावी है, तकनीक परिवर्तन का नाम है, परिवर्तन ही जीवन है, यह व्यावहारिक जीवन में कार्य करने की एक कला है, कार्य के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

वर्तमान में शिक्षा में गुणवता लाने हेतु शिक्षा में तकनीकी का समावेश किया जाना आवश्यक है, ताकि तकनीकी शिक्षा के द्वारा बालकों को वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित व क्रमबद्ध अध्ययन कराकर शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके एवं तकनीकी शिक्षा द्वारा अधिगम परिस्थितियों को बालक के व्यवहार के अनुकूल बनाया जा सके। इस हेतु आवश्यक है कि सभी शिक्षक मृदुल व कठोर उपागम का प्रयोग करें। जहाँ प्राचीन समय में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी, शिक्षक के व्याख्यान पर ही समस्त शिक्षण कार्य निर्भर करता था। वहीं वर्तमान में तकनीकी शिक्षा द्वारा बहुमाध्यमिक उपागमों का प्रयोग किया जा रहा है।

जहाँ शिक्षक एक वक्ता व शिक्षार्थी एक श्रोता न होकर अन्तःक्रिया प्रणाली अपनाते हैं, और प्रक्षेपी व अप्रक्षेपी साधनों का एक साथ आवश्यकतानुसार प्रयोग कर शिक्षण को रोचक व बोधगम्य बनाकर शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अथक प्रयास करते हैं।

वैश्वीकरण के इस युग में बदलते परिवेश में हुए परिवर्तनों ने हमारे शिक्षातंत्र को भी प्रभावित किया है। विशेष रूप से शिक्षक व शिक्षार्थी की भूमिका नई चुनौतियों के संदर्भ में तेजी से बदल रही है। आज शिक्षक का कार्य बहुत विस्तृत हो गया है, लेकिन साथ ही साथ उत्कृष्ट शिक्षण और अधिगम के लिये न केवल शिक्षक अपितु शिक्षार्थी के लिए भी सक्रिय होना परम् आवश्यक है। अतःइस हेतु शिक्षक का दायित्व केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित नहीं है, अपितु आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण करवाए जाने वाले विषय को स्वंय भली भांति अध्ययन कर तत्पश्चात् विद्यार्थी के लिए रुचिकर ढंग से प्रस्तुत करें। ताकि विद्यार्थी सम्पूर्ण कालांश में सक्रिय रह सके। इस प्रकार के शिक्षण व अधिगम से जहाँ शिक्षक को विषय वस्तु का वास्तविक ज्ञान हो जायेगा वही विद्यार्थी में बौद्धिक क्षमता, विषयमर्मज्ञता, अधिगम कुशलता, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, पूर्वानुमान, तर्क क्षमता जैसे गुण उसके समेकित व्यक्तित्व में स्वतःही समाहित हो जायेंगे। अर्थात शिक्षक के स्वंय की ज्ञान की जानकारी व छात्रों के ज्ञान की जानकारी अध्यापक को प्रभावी बनाती है।[1]

किसी भी शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक, विद्यार्थी एवं पाठयक्रम तीनों अवयवों का अलग–अलग एवं सम्मिलित योगदान महत्वपूर्ण होता है, इनमें से एक की भी अनुपस्थिति शिक्षा प्रणाली को अधूरा स्वरुप प्रदान करती है, तथा एक का भी असहयोग होने पर शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति असंभव है। इसके अतिरिक्त शिक्षण विधियाँ तथा शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण ऐसे कुछ अन्य आधारभूत तत्त्व हैं, जो शिक्षण एवं अधिगम को सोद्देश्य बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। शिक्षण को प्रभावी बनाने में इनका विशेष महत्त्व है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक छात्र को सूचना प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रविधियों का उचित समय पर प्रयोग कर उसे प्रभावी बनाता है। परिणामस्वरुप शिक्षकों की प्रभावशाली शिक्षण व अधिगम उपलब्धि से छात्रों के अनुभवों में व्यापकता आती है, जिससे वे अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन करने में सफल होते हैं।[2] यह शिक्षण प्रक्रिया सफल तभी कही जा सकती है, जब छात्र सही प्रकार से उसका अधिगम करलें। अतः अधिगम के बिना शिक्षण का कोई भी औचित्य शेष नही रह जाता है। अर्थात् निर्धारित उद्देश्यों तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों की सरल, सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रुप से प्राप्ति हेतु ऐसा शिक्षण जो रोचक हो तथा छात्रों को पुनर्बलन प्रदान कर रहा हो, को प्रभावी समझा जाता है। शिक्षण प्रभावशील होने पर छात्रों को विषयवस्तु सरलता से शीघ्र समझ में आ जाती है, तथा अधिक समय तक अधिक सामग्री स्मरण में रहती है।एक प्रभावी शिक्षक उसे कहते हैं, जो छात्रों से मौलिक कौशलों, अवबोध, उपयुक्त कार्य आदतें, वांछित मूल्यों की परख व उपयुक्त व्यक्तिगत समायोजन विकसित करता हो। शिक्षा की गुणवत्ता उपलब्ध शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर होती है, परन्तु यदि शिक्षक अपने उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन है, तो शिक्षा का सम्पूर्ण कार्यक्रम अप्रभावी एवं अनुपयुक्त हो सकता है।

शिक्षण एक कला तथा विज्ञान है अन्य कलाओं की भांति इसमें भी पारंगत होने के लिए विशेष प्रयत्न की आवश्यकता होती है। प्राचीन समय में शिक्षण का तात्पर्य केवल विषयवस्तु को कर्ण परम्परा द्वारा बालक तक पहुँचाना माना जाता था। प्राचीन शिक्षण का आधार स्मरण शक्ति का अभ्यास था। जबकि नवीन शिक्षण में ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है।[3]

प्राचीन समय में शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया में प्रेरक स्वरुप समझा जाता है, वहीं 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में तो यह स्पष्ट स्वीकारा गया कि शिक्षण प्रदान करने में बालक का विशेष महत्व है, क्योंकि शिक्षा विषय केन्द्रित की अपेक्षा बाल केन्द्रित हो गयी है। अतः सर्वप्रथम शिक्षक के लिए यह भली भांति समझना आवश्यक है, कि वह सीखने की प्रक्रिया को समझे,पाठय वस्तु, उसकी मात्रा तथा गति आदि को जाने। वह यह भी भली प्रकार समझे कि उपलब्धि की क्या प्रत्याशाएँ हैं, तथा किस स्तर तक यह प्राप्त हो सकती है, इस हेतु नवीन शिक्षण विधि के द्वारा कराया जाने वाला शिक्षण शिक्षक का कक्षा कक्षमें प्रेरणास्पद व आनन्दायी शिक्षण है। जो विद्यार्थी को उत्कृष्ट अधिगम के लिए उत्साहित करता है।[4] विद्यार्थी के उत्कृष्ट अधिगम के पश्चात् मुखमंडल पर संतुष्टि ही शिक्षण की सफलता निर्धारित करती है। इस हेतु प्रभावी शिक्षक को कक्षा शिक्षण के दौरान पाठ में निहित विभिन्न पक्षों को सक्रिय रहकर बालक की वैयक्तिक

भिन्नताओं को ध्यान में रखकर समझाया जाना चाहिए व नवीन शिक्षण विधि का प्रयोग कर विद्यार्थी के विचारों को महत्व देकर उनमें विषय के प्रति चिन्तन, मनन, और अभिव्यक्ति का सुअवसर प्रदान किया जाना चाहिए व साथ ही साथ विद्यार्थी के पूर्वज्ञान को ध्यान में रखते हुए पुनःस्मरण का भी ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार नवीन शिक्षण विधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों में अधिकाधिक जिज्ञासा उत्पन्न होकर पूछने की लालसा व झिझक दूर हो सकती है व साथ ही साथ चर्चा, प्रेरणा व पुनर्बलन द्वारा विद्यार्थी में अध्ययन के प्रति रुचि जागृत की जा सकती है।

मनुष्य पशु से भिन्न है, इसलिए वह नवीनता व परिवर्तन चाहता है।वर्तमान शिक्षा में विषय की गहनता है, लेकिन नवीनता नहीं है, इसलिए शिक्षण अधिगम नीरस व निश्चेतन होता जा रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में नवीनता ने बहुत तेजी का रुप धारण कर लिया है। प्रत्येक क्षण वस्तु नवीनता ले रही है। शिक्षण अधिगम के अन्तर्गत वैश्वीकरण के इस युग में अनेक तकनीकी शिक्षण विधियों ने भी पैर पसारे हैं। एक तरफ तकनीकी का जबरदस्त भूचाल तथा दूसरी तरफ ब्लेक बोर्ड पर तथा परम्परागत विधि से शिक्षण कराती हुई अधिगम प्रक्रिया। दोनों की इस नवीनता व पुरातनता की इस विषम परिस्थिति ने शोधार्थी के मन में भी गहरा विचारणीय भूचाल उत्पन्न किया है।

सरकार भी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों से परेशान है। उसके द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा के क्षेत्र में गिरता हुआ गुणात्मक स्तर तथा शिक्षा की नवीन चुनौतियों का सामना करने हेतु शिक्षण अधिगम को प्रबलात्मक बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। और इस हेतु सरकार द्वारा दिन प्रतिदिन शिक्षा व्यवस्था में नित नूतन नवाचारों का अनुप्रयोग करने के निर्देश व परामर्श शिक्षक को दिये जा रहे हैं ताकि शिक्षण व्यवस्था में सुधार किया जा सके। वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में समस्या के कारण और उनके समाधान व सुधार आदि पर ही अधिकांश शोध कार्य किये जा रहे हैं। कही भी नवीन शिक्षण विधि को शिक्षा क्षेत्र में प्रतिस्थापित नहीं किया जा रहा है, जिससे कि शिक्षा के इस गिरते हुए स्तर को ठीक किया जा सके।

जीवन को आगे बढाने के लिए परिवर्तन अनिवार्य है, और इस परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है शिक्षा। आज के युग में शिक्षा एक व्यवसाय, एक टेक्नोलॉजी के रुप में अग्रसर हो रही है। समय की गति, प्रकृति और परिस्थिति की आवश्यकता को देखते हुए शिक्षा की विकासमान टेक्नोलॉजी के युग में यह आयाम भी अपरिहार्य है।क्योंकि किसी भी नवीन विकास (परिवर्तन) के साथ नवीन प्रश्नों का जन्म होता है। नवीन गुत्थियाँ उपस्थित होती है। नए आयाम खुलते हैं। भूमण्डलीकरण के युग में दुरसंचार के सशक्त माध्यमों के कारण विविध देश, समाज व संस्कृति के संगम के साथ साथ सभी शिक्षकों की परम्परागत शिक्षण व्यवस्था में नित नूतन आयाम जुड़ते जा रहे हैं, लेकिन जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में टेक्नोलॉजी पैर पसारे खडी है वही वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर पर शिक्षण व अधिगम उपलब्धि का आधार परम्परागत विधि आधारित शिक्षण ही है।

कक्षा–कक्ष में वर्तमान चलन में परम्परागत विधि आधारित शिक्षण के अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि यह शिक्षण अधिगम उपलब्धि बहुत ही नीरस व अरुचिकर है साथ ही स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। वर्तमान प्रचलित परम्परागत विधि विद्यार्थी व शिक्षक दोनों के ही उत्साह व मनोबल को बढाने में कोई योगदान नहीं देती हैं, इसलिए शिक्षण के स्वरुप, उसके आयोजन पर पुनःविचार को ध्यान में रखते हुऐ माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम उपलब्धि में किसी नवीन शिक्षण विधि की आवश्यकता है, ताकि माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम उपलब्धि रुचिकर व आनंददायी बने एवं साथ ही शिक्षक भी विकासमान टैक्नोलॉजी के प्रभावी उपयोग की नवीन भूमिका के लिए तैयार हो व शिक्षक व विद्यार्थी भी सूचना व संचार प्रौद्यौगिकी का उपयोग करने के साथ ही विद्यार्थी भी स्वाध्याय के माध्यम से सम्पूर्ण कालांश में सक्रिय अधिगम कर सके।

निष्कर्ष

वर्तमान वैज्ञानिक युग के नवीन आविष्कार एवं नूतन प्रयोग से शिक्षक व विद्यार्थी को अवगत होना अति आवश्यक है। नवाचारी शिक्षक को प्राचीनतम् शिक्षण विधियों का त्याग करके अब कुछ नवाचारों व नवीनतम सामग्री के उपयोग से विषय को पूर्ण मनोयोग एवं बाल केन्द्रित शिक्षण के रुप में अध्यापन

कराकर शिक्षण को रुचिशील बनाना होगा। अतः नवाचारी शिक्षक को कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को अधिगम हेतु प्रेरित करने के लिए तथा विषयवस्तु को आत्मसात् करवाने हेतु नवाचार का प्रयोग करने का सकंल्प लेना होगा अर्थात् प्रचलित परम्परागत विधि आधारित शिक्षण के स्थान पर नवीन शिक्षण विधि का प्रयोग कर विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री अधिक सुग्राह्य बनाने के साथ अर्जित ज्ञान को स्थायी बनाया जा सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के मायने तीव्रता से परिवर्तित हो रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन एवं विकास के लिए शिक्षा को संयंत्र माना जाता है। इस प्रकार शिक्षा का सबंध वर्तमान से न होकर भविष्य से होता है। इसलिए शिक्षा को इस परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए कि इस कि 21 वीं शताब्दी में नयी पीढ़ी अपने आपको नयी शताब्दी के लिए समर्थ बना सके। अतः आज आवश्यकता है, ऐसी शिक्षा प्रणाली की जिसमें विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा की जो नवाचारिक शिक्षण विधि एवं शिक्षण कौशलों से संभव है जिससे छात्र गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त करे तथा उसके व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास हो।शिक्षक उस बाग का बागवाँ है जिसमें नन्हें–नन्हें बाल गोपालों के रुप में मन को हर्षित व उमंगित कर देने वाले पुष्प खिलते हैं, जिन्हें खाद पानी देकर सुगन्धित व परहितकारी पेड़ पौधों के रुप में इंसानों की रचना करते हैं। शिक्षक उस पारस के सदृश्य होता है, जिसका स्पर्श पाकर लोहा भी सोना बन जाता है। अर्थात् नितान्त अगढ़े व अनपढ़ बालक ज्ञान व कौशल की दृष्टि से सिरमौर बन जाते हैं।वर्तमान समय में शिक्षक को अपनी इस विशेषता को ध्यान में रखते हुए नवीन शिक्षण विधि का प्रयोग इस प्रकार भी करना होगा कि विद्यार्थी नवाचारी शिक्षण से प्राप्त सूचनाओं व ज्ञान को सही अर्थों में समझ कर सही संदर्भों में उपयोग कर सके। वैश्वीकरण के इस दौर में नवाचार युक्त नवीन शिक्षण विधि विद्यार्थी हेतु कम समय में रुचिकर अधिगम संस्थितियों का निर्माण करती है। ताकि विद्यार्थी अधिकाधिक रुप से अधिगम हेतु प्रेरित हो सके।

संदर्भ

1. बाछोतिया, हीरालाल (2011), ''शिक्षण साधन और बहुसंचार माध्यम'', भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन. सी. ई. आर. टी. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, अप्रैल
2. शिवकुमार, ए. एवं सिंगारावेलु, जी. (2016), ''शिक्षा में सम्प्रेषण उपकरणों की भूमिका'', 'एजूट्रेक्स', वॉल्यूम 16, न. 1, सितम्बर, पृ0 23–27
3. कुमारी, कविता एवं पाठक, आर.पी. (2012) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे विभिन्न शिक्षण विधियों की उपादेयता परिप्रेक्ष्य, योजना और प्रशासन का सामाजिक आर्थिक संदर्भ, अंक 1, अप्रैल, नई दिल्ली
4. सिगारावेलू, जी. एवं टी, मुथ्थुकिश्नन (2007), ''उच्च शिक्षा हेतु सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता'', एज्यूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेशन, हैदराबाद, अगस्त